यीशु का चेला
भाग 1 : बुलाहट
रविवार 08 मार्च, 2020

हमने पवित्रशास्त्र के अनुसार अपने उद्धार के लिए प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास किया है, जो कहता है: "प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा" (प्रेरितों के काम 16:31)। हमने अपने मुँह से यीशु को प्रभु जानकार अंगीकार किया है और अपने मन में यह विश्वास किया है कि परमेश्वर ने उन्हें मरे हुओं में से जिलाया, जैसा कि रोमियों 10:9 में लिखा है। हमारे विश्वास की यात्रा में अब आगे क्या है?

विश्वासी से चेला बनने की ओर:

प्रभु यीशु ने हमें केवल विश्वासी होने के लिए नहीं, बल्कि अपना चेला बनने के लिए बुलाया है।

महान आज्ञा में, प्रभु यीशु ने अपनी इच्छा व्यक्त की कि वह उन सभी के जीवन में क्या होते हुए देखना चाहते हैं, जो उनके नाम से प्रचार किए गए सुसमाचार पर विश्वास करेंगे।

मत्ती 28:19,20

19 इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो,

20 और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ। अमीन

पद 19 में 'चेले बनाओ' (यूनानी शब्द: *माथेटेयूओ*) का मतलब है—एक विद्यार्थी, सीखनेवाले या विद्वान् के रूप में जुड़कर चेला बनना। यह विचार चेला बनने के लिए ठोस प्रयास की ओर इशारा करता है।"इसका अर्थ है सिर्फ सोचना नहीं, बल्कि सीखने के लिए मेहनत और कोशिश भी करना। इसलिए, जो लोग यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, उन्हें इस तरह से बढ़ना चाहिए की वे विद्यार्थी बनकर के यीशु का चेला बनते जाये।

हमें चेला बनने के लिए बुलाया गया है। हम सबको यीशु का शिष्य बनने के परमेश्वर की इस योजना में शामिल होना है।

हम इस सफर पर चल पड़े हैं, यह दिखाने के लिए हमें बाइबल के परमेश्वर—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—के नाम में “बपतिस्मा” दिया जाता है। इसका अर्थ है कि अब हम पूरी तरह से उनके हैं और हमने अपना कुछ भी उनसे छिपाकर नहीं रखा है।

पद 20 में 'सिखाना' (यूनानी शब्द: *डिडास्को*) का मुख्य अर्थ है—शिक्षा, निर्देश या सिद्धांत देना।

परमेश्वर हमें अपना शिष्य बनाने की प्रक्रिया में जिन साधनों का उपयोग करता है, उनमें से एक है—शिक्षा, उपदेश और प्रशिक्षण यह सब इसलिए है ताकि हम उन सभी बातों को बड़ी लगन से और सम्पूर्ण हृदय के साथ थामे रखें, जो यीशु ने हमें सिखाई हैं।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में हम देखते हैं कि जो लोग विश्वास करते थे, उन्हें यीशु मसीह के चेले कहा गया। उनके पास केवल "विश्वासी" बनकर रहने का विकल्प नहीं था। हर विश्वासी एक चेला था!

और ये चेले ही थे, जिन्हें आगे चलकर "मसीही" के नाम से जाना गया।

प्रेरितों के काम 11:26
........और चेले सबसे पहले अन्ताकिया ही में मसीही कहलाए।

स्वामी के समान बनना

मत्ती 10:24,25
24 "चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं होता; और न दास अपने स्वामी से।
25 चेले का गुरु के, और दास का स्वामी के बराबर होना ही बहुत है। जब उन्होंने घर के स्वामी को शैतान कहा तो उसके घरवालों को क्या कुछ न कहेंगे!

एक "चेला" न केवल एक विद्यार्थी था, बल्कि एक दृढ़ अनुयायी और कट्टर समर्थक भी था, जिसने अपने गुरु की शिक्षाओं का पूरी निष्ठा से पालन किया। **चेले अपने गुरु का अनुसरण करने वाले** (अनुयायी) **होते हैं**। एक चेला वह है जो अपने गुरु जैसा बनता जा रहा है।

एक चेला अपने गुरु का वह शिष्य और अनुयायी है, जो अपने गुरु जैसा बनने के लिए पूरी तरह समर्पित है।

यीशु के शिष्यों के रूप में, हम उनके हृदय को समझने, उनके विचारों को जानने, उनके उद्देश्यों के लिए जीने, उनके तरीके से जीवन जीने और उनके जैसे काम (जो उन्होंने किये थे) करने के लिए पूरी तरह समर्पित हैं।

यीशु ने कहा था, *"चेले के लिए इतना ही पर्याप्त है कि वह अपने गुरु जैसा बने।"* **उसके चेले बनने के लिए यही आवश्यक और अंतिम लक्ष्य है—कि हम उनके समान बन जाएँ।**

प्रभाव और असर

जब हमारे आस-पास के लोग हमें अपने स्वामी (यीशु) की तरह जीते हुए देखेंगे, तो इसका उन पर कितना शक्तिशाली प्रभाव पड़ेगा!

घर पर, जो पत्नी या पति मसीह के समान व्यवहार करते हैं, वे अपने जीवनसाथी और बच्चों का सम्मान जीत लेते हैं। वे प्रेम करने वाले, कोमल, धैर्यवान, करुणामयी और दयालु होते हैं। वे सकारात्मक होते हैं, दूसरों का उत्साह बढ़ाते हैं, प्रेरणा देते हैं और हर परिस्थिति में शांति और आनंद लेकर आते हैं। वे विश्वास और साहस से भरे होते हैं। वे हर विपरीत परिस्थिति के विरुद्ध खड़े होते हैं, उन दुर्गम पहाड़ों (मुश्किलों) को चुनौती देते हैं, और तूफानों को शांत होने की आज्ञा देने का साहस रखते हैं।

कॉलेज या कार्यस्थल में, लोग उस पुरुष या स्त्री को बड़े सम्मान और प्रशंसा के साथ देखते हैं जो मसीह जैसे गुणों के साथ चलते हैं। उनकी बातों में वजन होता है। वे अपनी खराई के लिए जाने जाते हैं। वे ईश्वरीय अंतर्दृष्टि, विवेक और बुद्धि का प्रदर्शन करते हैं। वे फलदायी और प्रभावशाली होते हैं और बेहतर परिणाम दिखाते हैं।

हम चाहे कहीं भी हों, चेलों के रूप में हम अपने स्वामी का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। लोग हम में यीशु मसीह की छवि देखते हैं। एक समय था जब यीशु यरूशलेम और उसके आसपास एक पार्थिव शरीर में चलते थे। आज वे अपने लाखों चेलों के शरीरों के माध्यम से, दुनिया भर में और समाज के हर क्षेत्र में चलते हैं, बातें करते हैं और कार्य करते हैं। यीशु के चेले हर जगह यीशु को प्रकट कर रहे हैं!

पिता की योजना

हर विश्वासी के लिया परमेश्वर की यह योजना है कि वह यीशु मसीह के स्वरुप या समानता में बदलते चले जाएँ।

रोमियों 8:29

क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों, ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे।

चेलों के रूप में, हमें यीशु मसीह के स्वरूप में ढलना है। मसीह के जैसा बनना ही हमारा लक्ष्य है।

हमें चेला बनाने की उस प्रक्रिया को समझने की ज़रूरत है जो परमेश्वर ने तैयार की है, और हमें उन फलों (परिणामों) को भी समझने की ज़रूरत है जिससे हम अधिक यीशु के समान बनते जाते हैं।

चेला क्या नहीं होता है

कभी कभी हम "शिष्यता" को गलत समझते हैं (यीशु चेले बनने की प्रक्रिया)। इसलिए इसे स्पष्ट करने के लिए, यहाँ कुछ टिप्पणियाँ दी गयी हैं:

शिष्यता नियमों की किसी सूची या 'क्या करें और क्या न करें' का पालन करना नहीं है।

कभी-कभी लोग यीशु का चेला बनने को नियमों के एक समूह के रूप में बताते हैं, जैसे कि यीशु जैसा दिखने के लिए आपको एक खास तरीके से दिखना होगा या खास तरह के कपड़े पहनने होंगे। यीशु का चेला होना किसी बाहरी दिखावे, अर्थहीन रीति-रिवाजों या खाली रस्मों को निभाने से कहीं बढ़कर है।

जैसा कि हम बाद में सीखेंगे, सच्ची शिष्यता गहरे और उद्देश्यपूर्ण संबंधों के माध्यम—अपने गुरु के साथ बढ़ते हुए घनिष्ठ संबंध के द्वारा, और अन्य चेलों के साथ सच्चे संबंधों के माध्यम से, होती है।

शिष्यता अपनी पसंद के अनुसार पालन करना नहीं है

शिष्यता का अर्थ यह नहीं है कि आप यीशु द्वारा दिए गए निर्देशों में से केवल उन्हें चुनें जिन्हें आप पसंद करते हैं और बाकी को छोड़ दें। जैसा कि हमने पहले बताया, एक चेला अपने प्रभु में, जिसका उसने अनुसरण करने का निर्णय लिया है, उनमें पूरी तरह से "डूब" जाता है। वह गुरु द्वारा सिखाए गए हर निर्देश को स्वीकार करता है। उसका लक्ष्य होता है कि वह ऐसा बने कि "सब बातों में उनके जैसा बनता जाये" और मसीह के स्वरूप की पूर्णता (इफिसियों 4:13,15) तक पहुँच जाए।

शिष्यता कोई रोक कर रखने की योजना नहीं है

शिष्यता कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे स्थानीय कलीसिया आप पर इसलिए थोप रही है ताकि आप चर्च से जुड़े रहें। शिष्य बनना, हर विश्वासी के लिए प्रभु का बुलावा है। स्थानीय कलीसिया तो बस यीशु मसीह का चेला बनने की आपकी यात्रा में आपकी सहायता करती है।

व्यावहारिक चुनौतियों पर विजय पाना

हमारी शिष्यता की यात्रा में वे कौन सी बाधाएं या रुकावटें हैं जिन्हें हमें पार करना है?

यहाँ कुछ ऐसी बाधाएं दी गई हैं जिनका हम ज़िक्र करना चाहेंगे:

समय की कमी–किसी भी अन्य चीज़ की तरह जिसमें हम तरक्की करना चाहते हैं, हमें इसके लिए भी समय देने के लिए तैयार रहना चाहिए। चेलापन सिर्फ किसी के हाथ रखकर प्रार्थना कर देने से नहीं आ जाएगा। हालाँकि हाथ रखकर की जाने वाली प्रार्थना आपकी मदद कर सकती है, लेकिन मसीह जैसा बनने के लिए आपको अपना समय देना होगा।

जानकारी की अधिकता–इंटरनेट की वजह से आज विश्वासियों के पास शिक्षाओं, प्रवचनों, किताबों और पॉडकास्ट की भरमार है। कभी-कभी हम केवल जानकारी जुटाने को ही जीवन बदलने वाली वह सच्ची शिक्षा समझ लेते हैं जो हमें मसीह जैसा परिपक्व बनाती है। कभी-कभी हम इन संसाधनों के चक्कर में बुनियादी और ज़रूरी आदतों को छोड़ देते हैं, जैसे कि खुद बाइबल पढ़ना, व्यक्तिगत प्रार्थना का समय आदि।

बनावटीपन-यह कहना दुखद है कि कभी-कभी हम वास्तविक व्यक्तिगत आत्मिक विकास और बदलाव की जगह उपरी दिखावे को स्थान देते हैं, जैसे कि केवल भावनात्मक रूप से उत्साहित करने वाले अनुभव—चाहे वह कोई प्रवचन सुनना हो या आराधना का अनुभव आदि।

सांसारिकता का खिंचाव-संसार के आकर्षण और ध्यान भटकाने वाली चीजें बहुत हैं और कभी-कभी बहुत प्रभावशाली होती हैं। इसलिए हमें यीशु के चेले बनने के अपने बुलावे के प्रति और भी अधिक समर्पित होने की आवश्यकता है।

यीशु ने क्या कहा

यीशु ने अपने चेले होने के अर्थ के बारे में जो मुख्य बातें कहीं, उनका एक संक्षिप्त सारांश यहाँ दिया गया है। हम बाद में इनमें से कुछ का विस्तार से वर्णन करेंगे।

1) चेले का लक्ष्य अपने शिक्षक और स्वामी, यीशु मसीह के जैसा बनना है (मत्ती 10:25)।

2) चेलों को उपहास, झूठे आरोपों और उत्पीड़न का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए, जैसा कि उनके स्वामी ने किया था (मत्ती 10:25)।

3) चेला अपने स्वामी से बड़ा या ऊपर नहीं है (मत्ती 10:24)। इसका अर्थ है कि चेले को उसी मार्ग पर चलना चाहिए जिस पर उसके स्वामी चले थे। चेले के लिए कोई शॉर्टकट नहीं है।

4) जब एक चेला पूरी तरह से और अच्छी तरह से प्रशिक्षित हो जाता है, तब वह अपने स्वामी के समान होगा (लूका 6:40)।

5) एक चेला अपने स्वामी के वचन पर विश्वास करता है और उसके अनुसार जीता है (यूहन्ना 8:31)।

6) अपने स्वामी के प्रति एक चेले का प्रेम, किसी भी अन्य सांसारिक रिश्ते के प्रति प्रेम से बढ़कर होना चाहिए (लूका 14:26)।

7) एक चेले को प्रतिदिन अपना क्रूस उठाना चाहिए (लूका 14:27)। क्रूस दुःख, अलगाव और बलिदान को दर्शाता है।

8) एक चेले को अपने स्वामी के लिए अपना सब कुछ त्याग देना चाहिए (लूका 14:33)। इसका अर्थ है कि अपने स्वामी के लिए चेले का प्रेम, इस संसार की किसी भी अन्य वस्तु के प्रति उसके प्रेम या लगाव से कहीं अधिक बढ़कर है।

9) जब हम अपने जीवन से प्रेम दिखाते हैं तब दूसरे लोग इस बात से जान पाएंगे कि हम यीशु के चेले हैं (यूहन्ना 13:35)।

10) एक चेला बहुत सा फल लाएगा, ताकि उसके जीवन के द्वारा पिता की महिमा हो (यूहन्ना 15:8)।

11) चेले यीशु की तरह ही चंगाई, चमत्कारों और छुटकारे के काम करेंगे (मत्ती 10:1, यूहन्ना 14:12)।

क्या आप इस बुलावे को 'हाँ' कहेंगे?

तो यीशु का चेला बनने के इस बुलावे पर आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी? क्या आप यीशु मसीह में केवल एक विश्वासी रहने के बजाय, उनके एक सच्चे चेले बनने की इस यात्रा पर चलने के लिए तैयार हैं? अगले संदेश में हम उस प्रक्रिया पर चर्चा करेंगे जिसके माध्यम से हम सच्चे चेले बन पायेंगे।

सेवकाई का समय | उद्धार का बुलावा

परमेश्वर के लिए कुछ भी बहुत कठिन नहीं है। परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है।
यीशु मसीह को उद्धारकर्ता, चंगाई देने वाले, छुटकारा देने वाले और चमत्कार करने वाले के रूप में घोषित करें।
वह कल, आज और सर्वदा एक समान है।
पवित्र आत्मा की सामर्थ्य और पवित्र आत्मा के सभी वरदान आज हमारे लिए उपलब्ध हैं।
हमें उन कामों को करने का अधिकार मिला है जो उन्होंने किए, और यहाँ तक कि उनसे भी बड़े काम करने का।
हमें विश्वास के साथ उनके पास आना चाहिए और हम इसे प्राप्त करेंगे।
लोगों को सेवा करें जिससे उनके जीवन में चंगाई, छुटकारा और आश्चर्यकर्म होने पाए।
गवाहियाँ होने पायें।
पश्चाताप और उद्धार की प्रार्थना में अगुवाई करें।

लाइफ़ ग्रुप अध्ययन मार्गदर्शिका

रविवार 08 मार्च, 2020
यीशु का चेला
भाग 1: बुलाहट

यह लाइफ ग्रुप चर्चाओं में उपयोग के लिए एक सरल मार्गदर्शिका है। हमारा उद्देश्य रविवार के संदेश के अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित करना है—कि कैसे प्रत्येक व्यक्ति वचन का करने वाला बन रहा है और अपने जीवन को परमेश्वर के पवित्र वचन पर बना रहा है। लाइफ ग्रुप की सभा सामान्यतः 2 घंटे की होती है। प्रत्येक लाइफ ग्रुप में लगभग 12-15 लोग होते हैं।

तैयारी

लाइफ ग्रुप बैठक की तैयारी के लिए, आप Sermon Key Points (पाँच मिनट में संदेश का सार) या पूरा रविवार का संदेश सुन सकते हैं। आप रविवार के संदेश के नोट्स भी देख सकते हैं। यह सभी "All Peoples Church Bangalore-ऑल पीपल्स चर्च बैंगलोर" मोबाइल ऐप में या ऑनलाइन **apcwo.org/sermons** पर उपलब्ध हैं। लाइफ ग्रुप बैठक के लिए प्रार्थना करें और पवित्र आत्मा के कार्य और सेवकाई को आमंत्रित करें।

स्वागत

लाइफ ग्रुप बैठक की शुरुआत प्रार्थना, आराधना और किसी मनोरंजक गतिविधि के समय से हो सकती है।

परमेश्वर के वचन को सुनें

निम्नलिखित पवित्रशास्त्र के अंशों को पढ़ें: *मत्ती 10:24-25; मत्ती 28:19-20*

एक साथ मिलकर परमेश्वर के वचन की जाँच करें

कृपया एक साथ मिलकर इनमें से कुछ प्रश्नों पर चर्चा करें, और लोगों को अपने विचार साझा करने का समय दें। हम सामूहिक चर्चा के दौरान प्रत्येक व्यक्ति को प्रोत्साहित करे कि जो उन्होंने अपने व्यक्तिगत अध्ययन से सीखा है उसको लिखें।

1) महान आदेश में "चेला बनाने" का क्या अर्थ है?

2) यीशु मसीह का चेला होने का क्या अर्थ है (जैसा कि स्वयं यीशु ने कहा है), इसे एक या दो वाक्यों में व्यक्त करने का प्रयास करें?

3) एक विश्वासी बनने के बाद, क्या आपको लगता है कि आपने यीशु मसीह का चेला बनने की अपनी व्यक्तिगत यात्रा में प्रगति की है? यदि कुछ ऐसी चीजें रही हैं जिन्होंने इस प्रगति को रोका या किसी तरह से धीमा किया है, तो वे क्या हैं? अपनी व्यक्तिगत शिष्यता की यात्रा में इन बाधाओं को पार करने के लिए आप कौन से सकारात्मक कदम उठा सकते हैं?

यदि समय अनुमति दे, तो प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम तीन मिनट) लेकर एक या दो मुख्य सीख साझा करे और यह बताए कि वे इसे अपने विशिष्ट जीवन परिस्थितियों में कैसे लागू होते हुए देखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

अपने जीवन और आत्मिक यात्रा को साझा करते हुए संगति करें

प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम 3 मिनट) लेकर परमेश्वर के साथ अपने जीवन से संबंधित कुछ भी साझा करे—जो कुछ परमेश्वर उन्हें सिखा रहा है, प्रार्थना के उत्तर की कोई गवाही, या कोई विशेष चुनौती जिसके लिए वे प्रार्थना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें—प्रार्थना और सेवकाई के द्वारा

दो या तीन लोगों के छोटे समूहों में बँट जाएँ और बारी-बारी से आज जो सीखा गया है उसके प्रकाश में परमेश्वर को धन्यवाद दें और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करें। पवित्र आत्मा की अगुवाई सुनें। पवित्र आत्मा के वरदानों के बहने की अपेक्षा रखें—चंगाई, चमत्कारों की रिहाई, भविष्यवाणी आदि के द्वारा।

पुनः एकत्रित हों और इन विषयों के लिए मिलकर प्रार्थना करें:

1) *परिवारों की सुरक्षा और सुदृढ़ता के लिए*
2) *कलीसिया के रूप में हम पर परमेश्वर के पवित्र आत्मा का एक शक्तिशाली उंडेलाव हो, और हमारे द्वारा हमारे नगर और राष्ट्र में बहुतों को आशीष मिले। केवल परमेश्वर के आत्मा का सामर्थी कार्य ही हमारे नगर और राष्ट्र को बदल सकता है।*
3) *BUILD TO IMPACT (प्रभाव के लिए निर्माण करें) परियोजना के लिए—भूमि की खोज और अधिग्रहण की प्रक्रिया में परमेश्वर के हाथ की अगुवाई के लिए, और इस परियोजना को पूरा करने के लिए पर्याप्त से भी अधिक वित्तीय प्रावधान के लिए।*

अंत में मिलकर परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए समाप्त करें।

उपयोगी संसाधन

हर रविवार सुबह 10:30 बजे (भारतीय समय, GMT+5:30) हमारी ऑनलाइन संडे चर्च सेवा का लाइव प्रसारण देखें। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त आराधना, वचन और चंगाई, चमत्कार तथा छुटकारे की सेवा।
यूट्यूब: https://youtube.com/allpeopleschurchbangalore
वेबसाइट: https://apcwo.org/live

हमारी अन्य वेबसाइट्स और निःशुल्क संसाधन:
चर्च: https://apcwo.org
निःशुल्क संदेश: https://apcwo.org/resources/sermons
निःशुल्क पुस्तकें: https://apcwo.org/books/Hindi
दैनिक भक्ति-वचन: https://apcwo.org/resources/daily-devotional
यीशु मसीह: https://examiningjesus.com
बाइबल कॉलेज: https://apcbiblecollege.org
ई-लर्निंग: https://apcbiblecollege.org/elearn
वीकेंड स्कूल्स: https://apcwo.org/ministries/weekend-schools
काउंसलिंग: https://chrysalislife.org
संगीत: https://apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: https://pamfi.org
चर्च ऐप: https://apcwo.org/app
चर्चेस: https://apcwo.org/ministries/churches
विश्व मिशन: https://apcworldmissions.org